भाषा अनुवाद और व्यवसाय

शोध छात्रा - सुरेखा ज्ञानदेव आवटे
शोध निर्देशक -डॉ. बाबासाहेब शेख
प्रो.रामकृष्ण मोरे कला, वाणिज्य एवं विज्ञान
महाविद्यालय, आकुर्डी, पुणे – ४१००४४
Email – dnyanrekha7@gmail.com

सारांश -

भाषा एक ऐसा माध्यम है, जो एक मनुष्य को दूसरे मनुष्य से जोड़ता है। मनुष्य को ही नहीं, बल्कि यह एक संस्कृति को दूसरी संस्कृति के साथ भी संलग्न करती है। विश्व में लगभग 7000 से अधिक भाषाएँ बोली जाती हैं। बहुभाषिक भारत देश में संविधान द्वारा 22 भाषाओं को अधिकृत मान्यता दी गई है। इसी भाषा के सहारे आज "वसुधैव कुटुंबकम्" या "एक पृथ्वी, एक घर" की संकल्पना को हम पूर्ण कर सकते हैं।हर व्यक्ति के लिए सभी भाषाएँ सीखना संभव नहीं है, और इसी व्यवहारिक कठिनाई से भाषा–अनुवाद का जन्म हुआ होगा। अनुवाद का अर्थ है - स्रोत भाषा को लक्ष्य भाषा में बिना भाव बदले परिवर्तित करना। वैश्विक स्तर पर भाषा–अनुवाद की प्रक्रिया तेजी से बढ़ रही है। यह एक बहुत बड़ी कला है, जिससे सभी लोग परिचित नहीं होते। इस क्षेत्र में बहुत कम लोग सेवा कर रहे हैं।

आज दुनिया की 7000 से अधिक भाषाएँ हमें इंटरनेट, मोबाइल, यूट्यूब जैसे संचार माध्यमों पर आसानी से उपलब्ध हो जाती हैं। यही उपलब्धियाँ हमें रोजगार के अवसर भी प्रदान कर रही हैं। स्थानीय भाषाओंहिंदी और मराठीका अनुवाद वैश्विक स्तर पर आर्थिक और सांस्कृतिक अवसर पैदा कर रहा है। आज कृत्रिम या मशीनी भाषा–अनुवाद के माध्यम से अनुवाद का कार्य काफी आसान हो गया है, परंतु मशीनी अनुवाद में भावनाओं की कमी आज भी महसूस होती है। इसलिए मानवीय संवेदनशीलता और संस्कृति को समझने के लिए मनुष्य द्वारा किया गया अनुवाद ही सबसे महत्वपूर्ण माना जाएगा।

बीज शब्द -कृत्रिम भाषा, मशीनी अनुवाद,व्यवसाय,स्तोत्र भाषा,अनुसंधान,वसुधैव कुटुंबकम्, संवेदनशीलता।

प्रस्तावना

मानव सभ्यता के विकास में भाषा का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा हैं I भाषा एक ऐसा माध्यम है,जो एक मनुष्य को दूसरे मनुष्य से जोड़ता है। मनुष्य को ही नहीं, बल्कि यह एक संस्कृति को दूसरी संस्कृति के साथ भी संलग्न करती है। विश्व में लगभग 7000 से अधिक भाषाएँ बोली जाती हैं। बहुभाषिक भारत देश में संविधान द्वारा 22 भाषाओं को अधिकृत मान्यता दी गई है। इसी भाषा के सहारे आज "वसुधैव कुटुंबकम्" या "एक पृथ्वी, एक घर" की संकल्पना को हम पूर्ण कर सकते हैं। वैश्विकरण के इस युग में जब विश्व एक "वैश्विक गाँव " में परिवर्तित हो चूका हैं, तब विभिन्न

भाषाओँ के बीच संवाद की आवश्यकता पहले से अधिक बढ़ गई हैं। इसी आवश्यकता ने भाषा - अनुवाद को एक महत्वपूर्ण कौशल,एक उद्योग और एक उभरते हुए व्यवसाय के रूप में स्थापित किया है।

शोध का उद्देश

- भाषा अनुवाद की अवधारणा और उसकी आवश्यकताको स्पष्ट करना।
- वैश्विक और भारतीय संदर्भ में अनुवाद उद्योग का विकास का विश्लेषण करना।
- व्यवसाय ,रोजगार और आर्थिक अवसरों पर अनुवाद प्रभाव का अध्ययन करना।
- मशीनी अनुवाद बनाम मानवीय अवुवाद का तुलनात्मक मूल्यांकन करना।
- भविष्य में अनुवाद व्यवसाय की संभावनाओं को रेखांकित करना।

भूमिका

भाषा अनुवाद की अवधारणा में यह स्पष्ट है की, हर व्यक्ति के लिए सभी भाषाएँ सीखना संभव नहीं है, और इसी व्यवहारिक कठिनाई से भाषा–अनुवाद का जन्म हुआ होगा। अनुवाद का अर्थ है - स्रोत भाषा को लक्ष्य भाषा में बिना भाव बदले परिवर्तित करना। वैश्विक स्तर पर भाषा–अनुवाद की प्रक्रिया तेजी से बढ़ रही है। यह केवल शब्दों का रूपांतरण नहीं है,बल्कि सांस्कृतिक,सामाजिक और भावनात्मक संदर्भों का भी स्थानांतर है। इस लिए अनुवाद एक तकनिकी प्रक्रिया होने के साथ साथ एक संवेदनशील कला भी है। यह एक बहुत बड़ी कला है, जिससे सभी लोग परिचित नहीं होते। इस क्षेत्र में बहुत कम लोग कार्य कर रहे हैं।

वैश्विक और भारतीय संदर्भ में अनुवाद उद्योग का विकास बहुत तेजी से हो रहा हैं। आज दुनिया की 7000 से अधिक भाषाएँ हमें इंटरनेट, मोबाइल, यूट्यूब जैसे संचार माध्यमों पर आसानी से उपलब्ध हो जाती हैं। यही उपलब्धियाँ हमें रोजगार के अवसर भी प्रदान कर रही हैं। स्थानीय भाषाओंहिंदी और मराठीका अनुवाद वैश्विक स्तर पर आर्थिक और सांस्कृतिक अवसर पैदा कर रहा है। वैश्विक अनुवाद उद्योग का मूल्य अरबों डॉलर तक पहुँच चूका है। बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ,स्टार्ट-अप, ई-लर्निंग,OTT सेवाएँ और सरकारी संस्थाएँ अनुवादकों बड़ी संख्यां में माँग कर रही है। आज कृत्रिम या मशीनी भाषा–अनुवाद के माध्यम से अनुवाद का कार्य काफी आसान हो गया है, परंतु मशीनी अनुवाद में भावनाओं की कमी आज भी महसूस होती है। इस लिए मानवीय संवेदनशीलता और संस्कृति को समझने के लिए मनुष्य द्वारा किया गया अनुवाद ही सबसे महत्वपूर्ण माना जाएगा। आज अंग्रेजी,चीनी,स्पेनिश,अरबी ,हिंदी और फ्रेंच जैसी भाषाओँ में अनुवाद की माँग सबसे अधिक है। अनुवाद अब केवल साहित्य तक सिमित नहीं रहा बल्कि यह तकनिकी, वैज्ञानिक, क़ानूनी,चिकित्सा,व्यापारिक और डिजिटल क्षेत्रों में भी अनिवार्य हो चूका हैं।

अनुवाद और व्यवसाय के प्रमुख क्षेत्र

भारत एक बहुभाषिक देश है जहाँ संविधान द्वारा 22 भाषाओँ को मान्यता प्राप्त है। हिंदी,अंग्रेजी, मराठी,जैसे भाषाई संयोजनों में अनुवाद की माँग लगातार बढ़ रही है। डिजिटल इंडिया,स्टार्ट-अप इंडिया और स्थानीय भाषओं में सामग्री निर्माण में अनुवाद व्यवसाय को नए अवसर प्रदान किए हैं। भारत में क्षेत्रीय भाषाओं का महत्व बढ़ने से अनुवाद

उद्योग का विस्तार और तेज हुआ है। यह क्षेत्रीय भाषाओं का महत्व बढ़ने का श्रेय हमारे आदरणीय पंतप्रधान नरेन्द्र मोदी जी को जाता है। क्षेत्रीय भाषा का महत्त्व बढाकर भारत के विकास में उन्होंने एक अद्‌भुत आकर्षण बनाया हैं। जिससे है एक व्यक्ति अपनी भाषा से अनुवाद के रूप में जुड़ गया है।

अनुवाद और व्यवसाय के प्रमुख क्षेत्र में आज देश का हर एक युवक अनुबंध,रिपोर्ट,ईमेल नीतियाँ से जुड़कर कार्पोरेटर तथा व्यापारिक क्षेत्र में कार्य कर रहा है। आज तकनिकी दुनिया में मार्केटिंग सामग्री हो या विज्ञापन हो,अनुवाद की भाषा का उपयोग उत्पादन क्षमता को बढ़ाने के लिए किया जा रहा है। उसी प्रकार भाषा अनुवाद की सहायता से शिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में भी बहुभाषिक अध्ययन सामग्री उपलब्ध हो रही है। जिससे अनुसंधान का कार्य करना बहुत ही सुलभ हो गया है। विविध भाषाओं के संदर्भ ग्रंथ तथा ई-लर्निंग सामग्री और MOOCS (Massive Open Online Course) आज अनुवाद के रूप में उपलब्ध है। यह सामग्री जतन करने का कार्य आज कई अनुवादक ही कर रहें है।

मिडिया और मनोरंजन क्षेत्र में डबिंग स्क्रिप्ट का अनुवाद आज 21 वी सदी का सबसे बड़ा व्यवसाय बन गया है। जिसके माध्यम से अपनी आर्थिक और सामाजिक स्थिति में काफी सुधार हो रहा हैं। फिल्मों और वेब सीरिज के सबटाइटल बनाने के क्षेत्र में आज के युवा वर्ग को आकर्षक आमदनी मिल रही है। समाचार और डिजिटल कंटेंट के माध्यम से आज लोग अपनी भाषा कौशल का विकास की और बढ़ रहे हैं। इससे हमारी संस्कृति तथा हमारी भाषा अनुवाद का विकास असमानों को छु रहा है। पर्यटन और आतिथ्य उद्योगों में भी आज हम अपना व्यवसाय चुन सकते है। जैसे की गाइड बुक,ब्रोशर बनाना। विदेशी पर्यटकों के लिए बहुभाषिक सेवाएँ देना आदि कार्य से हम अपना स्वयं का रोजगार बना सकते है। स्वास्थ और चिकित्सा क्षेत्र में भी आज हर भाषा में दवाओं के निर्देश उपलब्ध हैं। उसी के साथ साथ स्वास्थ जागरूकता के लिए अनुवादित भाषा में सामग्री बनाई गई हैं।

मशीनी अनुवाद बनाम मानवीय अनुवाद

21 वी सदी के इस तकनिकी विश्व में मशीनी अनुवाद से तेज और सुलभ काम हो रहे है। स्वतः अनुवाद मशीन द्वारा संभव हैं। यह मशीन कंप्यूटर ही है। स्वतः अनुवाद मशीन द्वारा संभव हो जाने से अनुवाद कार्य में बड़ी सुविधा हो गई है। जिस भाषा में चाहे अनुवाद कार्य संभव है, वह पल भर में किया जा सकता है। इंटरनेट की गति के आधार पर कम समय में यह कार्य हो जाता है। भले ही सामग्री की मात्रा जीतनी भी क्यों न हो। मशीनी अनुवाद से समय श्रम और धन की बचत भी संभव है, इसी लिए मशीनी अनुवाद की माँग और लोकप्रियता भी बढ़ रही है। इस रूप में मनुष्य की सहायतासे मशीनी अनुवाद को पूर्णता मिलाने के कारण इस प्रक्रिया को मानवाश्रित मशीनी अनुवाद की संज्ञा दी जाती है।

मशीनी अनुवाद की सीमाएँ

मशीनी अनुवाद कम समय में पूरा हो जाने के बावजूद उसमें कुछ सीमाएँ अवश्य पाई जाती हैं। इनमें प्रमुख हैं - भावनात्मकता की कमी और संस्कृति की गहन समझ का आभाव। लिखित साहित्य में लेखक अर्थात एक मनुष्य अपनी

भावनाओं,संवेदनाओं और सांस्कृतिक संदर्भों को शब्दों में पिरोता है। परंतु यही भावनात्मक गहराई मशीनी अनुवाद सही रूप में प्रतिबिंबित नहीं हो पति और परिणाम स्वरुप अनेक त्रुटियाँ सामने आती हैं।

अनुवाद की चुनौतियाँ

- भाषाई विविधता के कारण शब्द वाली की जटिलता यह सबसे बड़ी चुनौती अनुवाद में आती है। एक की शब्द के कई सारे पर्यायवाची शब्द है और उसे अलग अलग भाषा में विविध अर्थ से जाना जाता हैं। उसी प्रकारसे अनुवाद के लिए तकनिकी शब्दों का भी अभाव देखा गया है। जैसे विज्ञान, चिकित्सा, कानून, इंजिनियर,सुचना कृषि आदि में प्रयुक्त शब्दों के लिए लक्ष्य भाषा में उपयुक्त, मानकीकृत और सर्वमान्य शब्दों का न होना यह समस्या अनुवाद को कठिन बनाती है।
- भावनात्मकता की कमी साहित्यकार रचनाओं में लेखक की संवेदनाएँ ,व्यंग ,करुना ,हास्य या व्यथा मशीन द्वारा सही रूप में नहीं पकड़ी जाती। परिणाम स्वरुप अनुवाद यांत्रिक और भावनिक हो जाता है।
- सांकृतिक संदर्भों की समझ का अभाव मुहावरों, कहावतों लोक-संदर्भ,धार्मिक प्रतीक, सामाजिक व्यवहार इनका सही अर्थ मशीन नहीं समझ पाती।
- एक ही शब्द के कई अर्थ होते हैं। मशीन संदर्भ के आधार पर सही अर्थ चुनने में अक्सर असफल रहती है।
- वाक्य संरचना और व्याकरण की त्रुटियाँ पाई गई है, वाक्य क्रम बिगड़ देती है। लिंग वचन में गलती करता है। जटिल वाक्यों को गलती तरीके तोड़ देता है।
- कभी कभी मुहावरों और कहावतों का गलत अनुवादित होते हैं।
- साहित्यिक और रचनात्मक लेखन नें असफलता पाई जाती हैं।

निष्कर्ष

अनुवाद और संचार माध्यमों का संबंध अत्यंत घनिष्ट और महत्व पूर्ण है। यह समाज में विभिन्न भाषाओं और संकृतियों के बीच एक सेतु का कार्य करता है। भाषा अनुवाद आज केवल संचार का साधन नहीं ,बल्कि एक उभरता हुआ वैश्विक उद्योग है। जिसमे व्यवसाय, शिक्षा, मिडिया, तकनीक और सामाजिक क्षेत्रों में इसकी भूमिका लगातार बढ़ रही है। अनुवाद के माध्यमसे कई प्रकार के व्यवसायों में रोजगार के अवसर आज मिल रहे है। जैसे की स्वतंत्र अनुवादक, कार्पोरेटर अनुवादक,कंटेंट लोकलाइजेशन विशेषज्ञ, सब टायटल और डबिंग विशेषज्ञ, तकनिकी अनुवादक,अनुवाद -संपादक और प्रूफरीडर तथा भाषा प्रशिक्षक। आज भारत में हिंदी और मराठी अनुवादकों की माँग विशेष रूप से बढ़ रही है। मशीनी अनुवाद ने प्रक्रिया को सरल बनाया हैं, परंतु मानवीय संवेदनशीलता और सांस्कृतिक समझ के कारण मानव -अनुवाद की आवश्यकता हमेशा बनी रहेगी। "मशीनी अनुवाद की विश्वसनीयता उस पर निर्भर करती है कि उसे किस प्रकार की सामग्री दी गई हैं,जबकि मानव अनुवादक हर परिस्थिति में उपयुक्त समाधान प्रदान कर सकते है।" भारत जैसे बहुभाषिक देश में अनुवाद -व्यवसाय आर्थिक, सांस्कृतिक और सामाजिक विकास का महत्वपूर्ण माध्यम बन

चूका है। आने वाली नई पीढ़ी के लिए मशीन अनुवाद और मानव अनुवाद दोनों में ही भरपूर कार्य किए जा सकते हैं। आधुनिक तकनिकी युग में इन दोनों का मिश्रित उपयोग अधिक प्रभावी और लाभकारी साबित कर "वसुधैव कुटुंबकम्" या "एक पृथ्वी, एक घर" की संकल्पना को पूर्ण कर सकता हैं।

संदर्भ -

- अनुवाद के क्षेत्र में रोजगार की संभावनाएँ , हिंदी कुंज पत्रिका
- भाषा विकास में अनुवाद का महत्व,स्वरुप और प्रकाश
- भाषा प्रौद्योगिकी का सामान्य परिचय, डॉ. जयशंकर बाबु,पांडिचेरी विश्वविद्यालय पाठ 36 मशीनी अनुवाद प्रणाली पृष्ट 7
- अनुवाद व्यवसाय प्रबंधन प्रणालियों के लिए अंतिम मार्गदर्शिका,कार्यन्वय से नवाचार तक
- कुँवर नारायण, अनुवाद एक सृजन,वाणी प्रकाशन 2012 पृष्ट संख्या 53
- भारतीय भाषाओं में अनुवाद की परंपरा - डॉ. रमेश कुमार,भारतीय अनुवाद परिषद् 2012
- वैश्विक संचार और अनुवाद - डॉ. विकास गुप्ता,वैश्विक प्रकाशन 2018
- अनुवाद का इतिहास और प्रक्रिया - डॉ. मीना कुमारी शिक्षा प्रकाशन, 2014

• **Copyright & License:**
© Authors retain the copyright of this article. This work is published under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), permitting unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.